राष्ट्रीय सांस्कृतिक सम्मेलन में चीन के कलाकारों ने खूब जमाया रंग

ज्ञानसरोवर (आबू पर्वत)। स्वर्णिम विश्व की संकल्पना से प्रभावित होकर पहली बार अरावली पर्वत श्रृंखला का श्रृंगार बने ज्ञानसरोवर पधारे चीन के तैंतीस कलाकारों ने बीती रात आयोजित संगीत संध्या में अपने देश का परंपरागत गीत नृत्य प्रस्तुत करके भारत के विभिन्न प्रांतों से आए सैकड़ों कला प्रेमियों को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस दल का नेतृत्व कर रही चण्डीगढ़ की ब्र.कु.सपना ने बताया कि ये सभी भाई-बहन मेडिटेशन का अभ्यास कर रहे हैं और इनकी भी मान्यता है कि इस विश्व को सुख-शांति व पवित्रता से परिपूर्ण बनाया जा सकता है। इन विदेशी कलाकारों ने यह दर्शाने का प्रयास किया कि चीन में भी बसंत ऋतु के आगमन पर सर्वत्र प्रसन्नता की अभिव्यक्ति की जाती है। जब इस दल में शामिल मात्र चार वर्षीय बालक ने वाद्य यंत्र बजाया और कविता पाठ किया तो हारमनी हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा।

संगीत संध्या की शुरूआत भी चौंकाने वाली थी। फतेहाबाद हरियाणा से आई नौ वर्षीय बालिका भूमि ने ''जिसकी रचना इतनी सुंदर वह कितना सुंदर होगा...'' गीत नृत्य प्रस्तुत किया। मंच संचालन कर रहे मुम्बई के टी.वी.कलाकार भरत कुन्द्रा के आग्रह पर इस बालिका ने यह रहस्योद्घाटन करके दर्शक समूह को दांतों तले अंगुली दबाने पर विवश कर दिया कि वह छ: वर्ष की आयु से मंच पर इसी तरह नृत्य प्रस्तुत करने लग गई थी। कुमारी वैशाली द्वारा अपने भाई व नन्ही बहन के साथ जब गणेश वंदना नृत्य प्रस्तुत किया गया तब भी दर्शक भावविभोर हो उठे। ब्र.कु.पुनीत ने ''मुझे जब से मिला तेरा प्यार और हर मुश्किल का हल होगा आज नहीं तो कल होगा...'' गाया तो दर्शक झूम उठे। कुरूक्षेत्र से आए राजगुरमीत ने सूफी गायन में अपनी परिपक्वता की छाप छोड़ी। महाराष्ट्र के जयेश भट्ट ने किशोर दा का सुप्रसिद्ध गीत ''जिन्दगी का सफर है ये कैसा सफर..'' गाकर तालियां बटोरी। मृणाल विश्वास ने सुरीले स्वर में भजन गाया। कार्यक्रम के अंतिम चरण में बबीता रानी ने भोजपुरी गीत ''पटना से पाजेब मंगवाई दे..'' गीत की शानदार प्रस्तुति की।

फोटो कैप्शन

4 ज्ञानसरोवर 1.जेपीजी.चीन से आए कलाकार अपना परम्परागत नृत्य प्रस्तुत करते हुए।

4 ज्ञानसरोवर 2. जेपीजी. गणेश वंदना प्रस्तुत करते कलाकार।